RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2018-20

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 75, अंक : 6 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 22 अप्रैल, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

19 APR 2018 CITY R.M.S.

वर्ष-75, अंक : 6, 19-22 अप्रैल 2018 तदनुसार 9 वैसाख सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

वरुण ! तुझे नमस्कार

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

नमः पुरा ते वरुणोत नूनमुतापरं तुविजात ब्रवाम।
त्वे हि कं पर्वते न श्रितान्यप्रच्युतानि दूळभ व्रतानि।।

-ऋ. २।२८।८

शब्दार्थ-हे **वरुण** = वरणीय, स्वीकरणीय, वरेश्वर परमेश्वर! **पुरा** = पहले भी **ते** = तुझे **नमः** = नमस्कार हमने किया **उत** = और **नूनम्** = अब भी करते हैं। हे **तुविजात** = महाशक्ते! बल में प्रसिद्ध, परमसिद्ध! **उत** = और **अपरम्** = आगे को **ब्रवाम** = करते रहें। हे **दूळभ** = दुर्लभ! **पर्वते+न** = पर्वत के समान **त्वे+हि** = तुझ ही में **अप्रच्युतानि** = च्युत न होने वाले, न टूटने वाले **व्रतानि** = व्रत, नियम **कम्** = अनायास **श्रितानि** = आश्रित हैं, रहते हैं।

व्याख्या-स्तुति-मिष से मनुष्य मानो प्रतिज्ञा कर रहा है कि मैं सदा तुझे नमस्कार करता रहूँ। पहले भी करता रहा हूँ, अब भी करता हूँ, आगे भी करता रहूँगा। भगवान् को कोई वस्तु हम दे नहीं सकते! एक इस कारण से कि उसे किसी पदार्थ की आवश्यकता नहीं है। दूसरे इस हेतु से कि हमारे पास जो कुछ भी है, सभी उसका दिया हुआ है, अतः नमस्कार के सिवा हमारे पास और देने को, अर्पण करने को कुछ भी नहीं रहता। वेद में इसी कारण बार-बार नमस्कार करने की चर्चा आती है। '**भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम**' [यजुः० ४०।१६] = हम तुझे बहुत-बहुत नमस्कार-वचन कहें। '**हुवे देवं सवितारं नमोभिः**' [ऋ० २।३८।९] = मैं नमस्कारों द्वारा जगदुत्पादक प्रभु को बुलाता हूँ।

अस्मै बहूनामवसाय सख्ये यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।
सं सानु मार्ज्मि दिधिषामि बिल्मैर्दधाम्यन्नैः परि वन्द ऋग्भिः।।

-ऋ० २।३५।१२

हम इस अनेकों के रक्षक मित्र का यज्ञों, नमस्कार और हवियों से सत्कार करते है। मैं शिखर को शुद्ध करता हूँ, प्रकाशों के द्वारा बार-बार धारण करता हूँ। अन्नादि के द्वारा रखता हूँ और ऋचाओं=मन्त्रों के द्वारा पूर्णतया वन्दना करता हूँ। सचमुच भगवान् '**नमसोपसद्यः**' = नमस्कार से प्राप्त हो सकता है। उसकी समता जब किसी भाँति भी कोई नहीं कर सकता, तो सिवा झुकने के और उपाय भी क्या रह जाता है ? किन्तु नमस्कार का यह भाव नहीं है कि बस हाथ जोड़कर बैठे रहें, वरन् अपना आचार भी उत्तम बनाना होगा। यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि हमारे नमस्कार आदि से पसीजकर भगवान् अपने विधानों को नहीं तोड़ता।

'**त्वे हि कं पर्वते न श्रितान्यप्रच्युतानि दूळभ व्रतानि**' = हे दुर्लभ प्रभो! पर्वत की भाँति तुझमें अटूट नियम अनायास रहते हैं। काव्यमयी रीति से प्रभु के नियमों की अटलता समझाई गई है। वेद में स्पष्टतया भी भगवान् के नियमों की अबाध्यमानता का बखान है-'**अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि**'-वरुण के नियम अटल हैं, अतः नमस्कार के साथ विचार और आचार का सुधार भी आवश्यक है। नमस्कार का अर्थ है कि जब भगवान् के विधान अबाध्यमान जान लिये, तब अभिमान छोड़कर नम्रता से उनके अनुसार चलना चाहिए। दूसरे शब्दों में कहें, तो आत्मसमर्पण करने का आदेश वेद ने दिया है। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

जिलाधीशों को ज्ञापन देकर पंजाब की समस्त आर्य समाजों ने अपने संगठन का परिचय दियाः -सुदर्शन शर्मा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने एक आज एक प्रैस वक्तव्य में कहा कि पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़ में सन् 1975 से स्थापित महर्षि दयानन्द चेयर को संस्कृत विभाग में विलय करने का 16 अप्रैल 2018 को पंजाब में भारी विरोध किया गया और पंजाब की समस्त आर्य समाजों ने अपने संगठन का परिचय देते हुये अपने अपने क्षेत्र के जिलाधीशों और एस.डी.एम. को ज्ञापन पत्र सौंपा। सभा प्रधान जी ने कहा कि यदि सरकार ने दयानन्द चेयर को संस्कृत विभाग में विलय किया तो पंजाब के साथ साथ सारे भारत में इसका भारी विरोध किया जायेगा और यदि आर्य समाज को इसके लिये आन्दोलन भी करना पड़ा तो वह करेगी जिसकी सारी जिम्मेदारी सरकार की होगी। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने शिक्षा के क्षेत्र में जो योगदान दिया है उसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। दयानन्द चेयर के संस्कृत विभाग में विलय का निर्णय आर्य समाज की भावनाओं के खिलाफ है और आर्य समाज इसे कतई भी बर्दाश्त नहीं करेगा। उन्होंने बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अनेक क्रान्तिकारियों के प्रेरणास्रोत रहे हैं और देश की आजादी में आर्य समाज का पूरा योगदान था। देश को आजाद करवाने में 85 प्रतिशत योगदान आर्य समाज का था और यह बात आजादी के इतिहास में सुनहरी अक्षरों में अंकित है। उन्होंने कहा कि नारी को शिक्षा का अधिकार दिलाने के लिये आर्य समाज ने कड़ा संघर्ष किया जिसके परिणामस्वरूप आज नारी शिक्षित होकर प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के बराबर कार्य कर रही है। इसलिये ऐसे महापुरुष के नाम पर रखी गई दयानन्द चेयर को संस्कृत विभाग में विलय करना आर्य समाज के साथ अन्याय है और आर्य समाज इसे कतई बर्दाश्त नहीं करेगा।

वेदों में आधुनिक अद्भुत विज्ञान

ले.-डॉ. विक्रम कुमार विवेकी पंजाब वि.वि. चण्डीगढ़

आज विज्ञान का चमत्कारिक युग है। जिस काम को हम अधिकांश रूप में आ जा कर करते थे वे सब आज घर बैठे ही कर लेते हैं। आज कम्प्यूटर, लैपटॉप, मोबाईल ने तहलका मचा दिया है। दूरस्थ मित्रों एवं पारिवारिक जनों से अब आमने-सामने जैसी भेंटवार्ता, समाचारों एवं भाषणों का सम्पूर्ण विश्व में लाईव टेलिकास्ट (जीवन्त प्रसारण) विविध खेलों का क्रीड़ागण से भी अधिक सुविधाजनक एवं सटीक दर्शन, विविध युद्धों का आँखों देखा हाल, कक्षाओं में दिये जाते लैक्चरों, पृथिवी, ग्रह-नक्षत्रों, अनन्त आकाश व समुद्र की अतल गहराईयों में घटती हुई घटनाओं का यथार्थ दर्शन एवं श्रवण हम बैडरूम में बैठे-बैठे ही कर लेते हैं। यह सब कैसे हो रहा है, यह एक यक्ष प्रश्न है। परन्तु उत्तर वैज्ञानिक है। यह उत्तर ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त के प्रथम मन्त्र में है। पाठक पढ़कर चौंक रहे होंगे, परन्तु यह शाश्वत सत्य है। इस सत्य को जानने के लिए आइये वैदिक यात्रा करते हैं।

वेद शब्द को प्रायः सबने सुना है। जिसका साक्षात् अर्थ है ज्ञान (नॉलेज)। ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र में ही उपर्युक्त विज्ञान की सूक्ष्म चर्चा है। मन्त्र है-'अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।।' इस मन्त्र में छोटा सा वाक्य है-'अग्निम् इडे' जिसका अर्थ है-मैं अग्नि की स्तुति करता हूँ। शेष शब्द अग्नि के पाँच विशेषण हैं।

यह अग्नि क्या है, कैसी है, कौन सी है, कहाँ है, क्या करती है, इसका स्वरूप एवं स्वभाव क्या है ? आदि अनेक प्रश्न उठते हैं, जिनका समाधान इसी मन्त्र के विशेषणों में तथा अन्य अगले आठ मन्त्रों में स्थान-स्थान पर दिया गया है। समग्र वैदिक वाङ्मय में अग्नि के मुख्यतया तीन स्वरूप बताये गये हैं। वे हैं-1. सूर्याग्नि, 2. विद्युदग्नि एवं 3. पार्थिवाग्नि। अग्नि शब्द के दर्जनों अर्थ होते हैं, जिनको स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा कृत भाष्य में देखा जा सकता है। जैसे-ईश्वर, अध्यापक, नायक आदि। परन्तु यहाँ विज्ञान के क्षेत्र में केवल अग्नि से ही तात्पर्य है। उपर्युक्त तीनों अग्नियाँ भौतिक अग्नि ही हैं। पंच महाभूतों में जो अग्नि नामक भूत तत्त्व है, उसी के ही ये तीन स्वरूप हैं। आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी नामक पाँच महाभूतों से पाठक सुपरिचित हैं। पार्थिवाग्नि तो वह है, जो रसोईघर आदि में प्रज्वलित होकर हमारी सेवा करती है। सूर्याग्नि के बिना सृष्टि की परिकल्पना तक नहीं की जा सकती। विद्युदग्नि इन सब में अद्भुत है जो उपर्युक्त समग्र विज्ञान का आधार तत्त्व है।

कम्प्यूटर या मोबाईल आदि में दो तत्त्व मुख्य हैं-ठोस पदार्थ एवं सूक्ष्म पदार्थ (हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर)। ठोस पदार्थ स्थूल होता है, जो दिखाई देता है। सूक्ष्म पदार्थ अदृश्य होता है। विद्युत् अग्नि करण्ट के रूप में अदृश्य ही होती है। यही मुख्य सॉफ्टवेयर है। इसके बिना किसी भी विज्ञान का आविर्भाव असम्भव है। विद्युत् की गति विस्मयकारिणी है। इसी के कारण ही मोबाईल, कम्प्यूटर आदि सक्रिय होकर वास्तविक परिणाम दे पाते हैं। विद्युत् न हो तो ये सब केवल निष्क्रिय तत्त्व ही होते हैं। एक ही घर में बैठे दो सदस्य मोबाईल में जब बातें करते हैं तो उनकी पारस्परिक शारीरिक दूरी एक कमरे से दूसरे कमरे तक की होती है। परन्तु यह कितना वैज्ञानिक सत्य है कि उनके वार्तालाप की ध्वनि उपग्रहों के माध्यम से हजारों किलोमीटर की द्रुतगति से विद्युत् अग्नि (स्पैक्ट्रम) के माध्यम से एक दूसरे तक स्पष्ट तथा पहुँच रही होती है। विद्युत् न हो तो ये सब संसाधन निरर्थक हैं।

इसरो ने फरवरी में एक साथ 104 उपग्रह छोड़ने का रिकार्ड बनाने के बाद अपने पी. एस. एल. वी. प्रक्षेपण यान से 31 उपग्रह लांच किये, जिसमें 29 नैनों उपग्रह अन्य देशों के थे। इसमें भारत का जो उपग्रह है, वह सरहद एवं पड़ौसी देशों पर निगाह रखता है। यह उपग्रह 500 किलोमीटर की ऊँचाई से पड़ौसी देशों के टैंकों की गिनती तक कर सकता है। सर्जिकल स्ट्राईक के चित्रों का सम्प्रेषण भी इन उपग्रहों के द्वारा ही हुआ है। इन उपग्रहों का काम पूर्ण होने के बाद भी वे अपनी कक्षा में 30 हजार किलोमीटर प्रति सैकेण्ड की भीषण रफ्तार से घूमते रहते हैं।

पाठक यहाँ थोड़ी देर तक अन्तः चक्षु से विद्युत् गति की परिकल्पना करें। जाहिर है कि इन ग्रहों का प्रक्षेपण, फिर उन्हें वाँछित ऊँचाई की कक्षा में स्थापित करना, उन्हें नियंत्रित करना, उनसे प्राप्त महत्त्वपूर्ण डैटा का सही इस्तेमाल करना एक बड़ी जटिल टेक्नोलॉजी का नतीजा है। ऐसे-ऐसे राडार बन गए हैं जो 30 सेंटीमीटर तक के आकार की चीजों का पता 1000 किलोमीटर की दूरी से ही लगा लेते हैं। इन दूर संवेदी उपग्रहों की मदद से धरती के भीतर के खनिज भण्डारों का भी पता लगाया जाता है। यह सब काम कैसे हो रहा है? सूर्य, पृथिवी, अन्य ग्रह नक्षत्रों का आकार व पारस्परिक दूरी का सटीक ज्ञान कैसे लगाया गया है? विमानों की गति, गति का नियंत्रण, शारीरिक एवं बाह्य समस्त यन्त्रों का संचालन, समग्र ब्रह्माण्ड की समस्त गतिविधियाँ, इसी अग्निविद्या पर ही तो आधारित हैं। यह अग्नि सर्वत्र एवं हमारे सम्मुख सर्वदा विद्यमान है। इसलिए ऋग्वेद के मन्त्र में पहला विशेषण कहा गया है-'पुरोहितम्'। अर्थात् जो अग्नि 'पुरः' हमारे सामने 'हितम्' सर्वत्र विद्यमान रूप में रखी हुई है। अदृश्य विद्युत् शक्ति के रूप में, गति के रूप में, आकर्षण शक्ति के रूप में विद्यमान है। 'पुरोहित' शब्द का तात्पर्य केवल मन्दिर का पुजारी या पण्डित ही नहीं होता। पण्डित को भी पुरोहित इसलिए कहते हैं कि वे हमारे अग्रणी माने जाते हैं। अस्तु।

यह अग्नि अग्रणी है। निरुक्त-कार यास्क ने भी लिखा है-'अग्निरग्रणिर्भवति, पुरः एनं दधति' अर्थात् अग्नि अग्रणी इसलिए है, क्योंकि यह सबसे आगे होती है। 'पुरोहित' इसलिए कहलाती है, क्योंकि यह सबको आगे रखती है, विज्ञान इस अग्नि तत्त्व के बिना पंगु है। यह न तो सोचिए जीवन कितना दूभर हो जाए।

यह अग्नि 'यज्ञस्य देवम्' यज्ञ का देवता भी है। यहाँ यज्ञ से तात्पर्य केवल यज्ञकुण्ड की अग्नि मात्र नहीं है। 'यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म' के अनुसार प्रत्येक श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ है और यह अग्नि उन समस्त श्रेष्ठ कर्मों का देव है। 'देवो दानाद् वा दीपनाद् वा द्युस्थानो भवतीति वा' (निरुक्त)। बहुत कुछ देने, प्रकाशित होने व द्युलोक में भी उसकी सत्ता होने के कारण अग्नि 'देव' कहलाता है। यह अग्नि ऋत्विक् भी है अर्थात् ऋतुओं, मौसमों का निर्माता है। इसे 'होता' भी कहा गया है, क्योंकि शिल्प क्रियाओं से उत्पन्न करने योग्य पदार्थों का देने हारा है। इसे 'रत्नधातमम्' भी कहा गया है क्योंकि यह अच्छे-अच्छे सुवर्ण आदि रत्नों का धारक तत्त्व है। सुवर्ण अग्नि का ही रूपान्तरण है।

यहाँ हम पाठकों से निवेदन करना चाहेंगे कि वे ऋग्वेद के इस मन्त्र एवं परवर्ती अन्य मन्त्रों का दयानन्द सरस्वती के द्वारा किए अर्थ एवं विस्तृत भाष्य को पढ़ें व गहन चिन्तन करें। स्वामी जी लिखते हैं-यास्क मुनि जी स्थौलाश्ठीवि ऋषि के मत से अग्नि शब्द का 'अग्रणी' अर्थात् सबसे उत्तम अर्थ किया है अर्थात् जिसका सब यज्ञों में पहले प्रतिपादन होता है, वह सबसे उत्तम ही है। इस कारण अग्नि शब्द से 'ईश्वर' तथा दाह गुण वाला 'भौतिक अग्नि' इन दो ही अर्थों का ग्रहण होता है।

अब भौतिक अर्थ के ग्रहण करने में प्रमाण दिखलाते हैं-(यदश्वं) इत्यादि शतपथ ब्राह्मण के प्रमाणों से अग्नि शब्द भौतिक अग्नि का ग्रहण होता है। यह अग्नि बैल के समान सब देश देशान्तरों में पहुँचाने वाला होने के कारण 'वृष' और 'अश्व' भी कहाता है, क्योंकि वह कलाओं के द्वारा 'अश्व' अर्थात् शीघ्र चलने वाला होकर शिल्प विद्या के जानने वाले विद्वान् लोगों के विमान आदि यानों को वेग से वाहनों के समान दूर-दूर देशों में पहुँचाता है। (अग्निमीडे) परमार्थ और व्यवहार विद्या की सिद्धि के लिए अग्नि शब्द करके परमेश्वर और भौतिक-ये दोनों अर्थ लिए जाते हैं। जो पहले समय में आर्य लोगों ने अश्व विद्या के नाम से शीघ्र गमन का हेतु शिल्प विद्या विकसित की थी, वह 'अग्नि विद्या' की ही उन्नति थी। आप ही आप प्रकाशमान, सबका प्रकाशक और अनन्त ज्ञानवान् आदि हेतुओं से अग्नि शब्द करके परमेश्वर तथा रूप, दाह, प्रकाश, वेद, छेदन आदि गुण और शिल्पविद्या के मुख्य साधक आदि हेतुओं से प्रथम मन्त्र में भौतिक अर्थ का ग्रहण किया है।

अगले द्वितीय मन्त्र में 'अग्नि'

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

अलौकिक प्रतिभा के धनी-पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

महर्षि दयानन्द के वेद प्रतिपादित सत्यज्ञान मूलक मन्तव्यों, सिद्धान्तों, शिक्षाओं और विचारों को जिस खूबी के साथ मुनिवर गुरूदत्त ने समझा, जीवन में ढाला और प्रचारित किया उस पर विचार करके मनुष्य चकित एवं आचम्भित हो जाता है। जीवन में केवल एक बार और वह भी परलोक गमन करते हुए ईश के सच्चे उपासक, योगी, यति तपस्वी दयानन्द को उन्होंने देखा था। वार्तालाप करने या शंका समाधान करने अथवा महर्षि के संसर्ग में रहकर उनके सदुपदेशों से लाभ उठाने का तो गुरूदत्त जी को समय नहीं मिला परन्तु कमाल यह है कि 18 वर्ष का यह नवयुवक महर्षि के प्राणोत्सर्ग के अद्भुत दृश्य को देखने मात्र से जो कुछ प्राप्त कर पाया वह किसी दूसरे को प्राप्त न हो सका। परलोक सिधार रहे ऋषि ने इन्हें एक दृष्टि देख लिया और ये कुछ के कुछ बन गए। गुरूदत्त ने ऋषि का संदेश अपने हृदय पटल पर अंकित कर लिया और समझा कि इसके प्रचार का उत्तरदायित्व मुझ पर ही है। इस दायित्व का पालन करने के लिए गुरूदत्त विद्यार्थी जी ने अपने आपको पूर्णतः ऋषि मिशन के लिए समर्पित कर दिया। महर्षि दयानन्द के अन्तिम प्राणोत्सर्ग के दृश्य ने पं. गुरूदत्त विद्यार्थी के अन्दर ईश्वर भक्ति का संचार किया, उनके जीवन का प्रवाह नास्तिकता से आस्तिकता की ओर मुड़ गया और गुरूदत्त विद्यार्थी ईश्वर भक्ति के रंग में रंग गए।

संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, फारसी, पदार्थ विज्ञान, भूगर्भ विद्या, रसायन शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, शरीर विज्ञान आदि विविध विद्याओं में पारंगत इस नवयुवक को किस शक्ति ने आर्य समाज की ओर आकृष्ट किया? पाश्चात्यों की नास्तिकता बढ़ाने वाली निकम्मी शिक्षा और विचारधारा से पृथक कर सच्ची आस्तिकता का पाठ किसने पढ़ाया? संस्कृत ही पूर्ण और वैज्ञानिक भाषा है, यह ध्रुव सत्य गुरूदत्त को किसकी कृपा से ज्ञात हुआ? क्या किसी शास्त्रार्थ में पराजित होकर उसने ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया? या किसी की तर्कणा शक्ति से पराभूत होकर उसे अपना मार्ग बदलना पड़ा? नहीं बिल्कुल नहीं। कारण के बिना कोई कार्य नहीं हुआ करता। गुरूदत्त के जीवन की चिन्तनधारा में परिवर्तन भी बिना कारण कैसे हो सकता था। महान् संस्कारी आत्मा गुरूदत्त को एक दूसरी विलक्षण प्रभु भक्ति में रंगी दयानन्द की आत्मा ने बिना कुछ कहे ही अपने समान आस्तिकता के रंग में रंग डाला। महर्षि दयानन्द के प्राणोत्सर्ग दृश्य ने गुरूदत्त का जीवन, चिन्तन, दृष्टिकोण सभी कुछ बदल दिया।

एक बार किसी ने पं. गुरूदत्त विद्यार्थी से कहा कि आपको स्वामी जी के योगी होने के बारे में अनेक बातों का ज्ञान है। आप उनका जीवन चरित्र क्यों नहीं लिखते? अत्यन्त गम्भीर होकर उत्तर दिया कि मैं प्रयास कर रहा हूं। प्रश्नकर्ता ने पुनः पूछा- जीवन चरित्र कब छप जाएगा? गुरूदत्त बोले आप कागज पर लिखा जीवन चरित्र समझ रहे हैं, मेरे विचार में महर्षि का जीवन चरित्र अपनी पूर्ण आयु में लिखना चाहिए और इसी के लिए मैं प्रयत्न कर रहा हूं।

वेद की सत्यता पर गुरूदत्त की ऐसी दृढ़ आस्था थी कि जब कभी किसी वैज्ञानिक के कथित आविष्कार की कोई उनसे चर्चा करता तो वे झट से उत्तर देते कि हां भाई वह वैज्ञानिक सच्चाई के निकट आ गया है। सत्य पूर्ण है और प्रभु प्रदत्त वेद ज्ञान तथा सृष्टि नियम द्वारा पूर्व ही प्रकाशित है। जिस वैज्ञानिक को जब जितना बोध होता है उतना वह असत्य से दूर होकर सत्य के निकट आ जाता है। बस यही आविष्कार है, इससे आगे कुछ नहीं। अपने ऐसे ही पवित्र और सत्य ज्ञान मूलक विचारों को दिसम्बर 1885 में लाहौर आर्य समाज के वार्षिक उत्सव पर दिए गए अपने भाषण में गुरूदत्त जी ने व्यक्त करते हुए कहा था।

आधुनिक विज्ञान चाहे उसमें कितने ही गुण क्यों न हो, जीवन की समस्या पर कुछ भी प्रभाव नहीं डालता। वह मनुष्य की आत्मा में आन्दोलन पैदा करने वाले सब से महान् और कठिन प्रश्न मनुष्य जाति के आदि मूल और इसके अन्तिम भाग्य के हल करने में कुछ भी सहायता नहीं करता। आधुनिक विज्ञान चाहे प्रत्येक नाड़ी और हड्डी को चीर ड़ाले और लहू की बूंद की अतीव सूक्ष्म दर्शक यन्त्र द्वारा जो सम्भवतः उसे मिल सकता है, बड़ी सूक्ष्म परीक्षा कर ले, पर इस प्रश्न पर उससे कुछ भी नहीं बन पड़ता कि वह जीवन के रहस्य को खोल नहीं सकता। चाहे शताब्दियों तक चीर फाड़ और परीक्षण करता रहे। जीवन की समस्या वेदों की सहायता के बिना हल नहीं की जा सकती। वही केवल इस अद्भुत रहस्य का उद्घाटन कर सकते हैं और उन्हीं की ओर वैज्ञानिक लोगों को अन्त में आना पड़ेगा।

इस प्रतिभाशाली वेद मनीषी, तपस्वी विद्वान् को पूरे 26 वर्ष ही जन सेवा का अवसर मिल पाया परन्तु इस स्वल्प जीवन में ही उसने अमित यश और कीर्ति का अर्जन कर लिया। पं. चमूपति जी ने ठीक ही लिखा था कि-

यदि इनकी आयु कुछ लम्बी होती तो इनके द्वारा न जाने क्या-क्या पांडित्य के, विकास के, तर्क के, आध्यात्मिक अनुभूति के अमूल्य रत्न केवल आर्य समाज को ही नहीं किन्तु सम्पूर्ण मानव संसार को हस्तगत होते। इस अपरिपक्व अवस्था में इनके लिखे हुए लघु लेख तथा पुस्तिकाएं ही इनके असीम पांडित्य के बीच ही में रूक गए प्रवाह के अकाट्य प्रमाण हैं। गुरूदत्त केवल पंडित ही न था, वह सच्चा प्रतिभाशाली ऋषि पुत्र था। उसे न धन की परवाह थी और न जन की। सत्य की वेदि पर उसने अपना सुख, सम्पत्ति और अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया।

पं. गुरूदत्त विद्यार्थी असाधारण प्रतिभा के धनी थे। इतनी कम आयु में उन्होंने जो ज्ञान प्राप्त किया था उससे उनकी मेधा बुद्धि का ज्ञान हो जाता है। गुरूदत्त जैसा अद्भुत प्रतिभा का धनी व्यक्ति यह कहता है कि मैंने सत्यार्थ प्रकाश का 18 बार अध्ययन किया परन्तु मुझे हर बार कोई नई चीज मिली और वो कहा करते थे कि अगर सत्यार्थ प्रकाश को खरीदने के लिए मुझे अपनी सारी संपत्ति भी बेचनी पड़े तो मैं उसे बेचकर भी सत्यार्थ प्रकाश खरीदूंगा। ऐसे असाधारण प्रतिभा के स्वामी और महर्षि दयानन्द के सच्चे शिष्य को 26 अप्रैल को उनके जन्मदिवस पर याद करते हुए उनके द्वारा आर्य समाज के लिए किए गए कार्यों को याद करें।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य समाज नंगल टाऊनशिप का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज नंगल टाऊनशिप का वार्षिकोत्सव दिनांक 4,5 और 6 मई 2018 को धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। इस वार्षिकोत्सव में आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान् पं. श्री जगदीशचन्द्र वसु एवं उनकी धर्मपत्नी भजनोपदेशिका श्रीमती निर्मला वसु जी पधार रहे हैं। आप सभी से निवेदन है कि अपने परिवार एवं इष्टमित्रों सहित इस यज्ञ में पधार कर इस उत्सव की शोभा को बढ़ाएं व अपना यथायोग्य तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करें एवं धर्म लाभ उठाऐं।

-सतीश अरोड़ा मन्त्री आर्य समाज नंगलटाऊनशिप

आगामी आर्य महासम्मेलन बरनाला में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.), गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन **11 नवम्बर 2018** को बरनाला में आयोजित किया जा रहा है। इसलिये पंजाब की समस्त आर्य समाजों से निवेदन है कि वह इन तिथियों में अपनी अपनी आर्य समाज का कोई कार्यक्रम न रखें और इस आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिये पूरी शक्ति से जुट जाएं। आपके सहयोग से इससे पूर्व 17 फरवरी 2017 को लुधियाना और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सफल आर्य महासम्मेलन कर चुकी है। आशा है इस आर्य महासम्मेलन में भी आप का पूरा पूरा सहयोग मिलेगा।

प्रेम भारद्वाज
सभा महामंत्री

'नशे से पतन की ओर बढ़ता देश और समाज'

ले.-मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001

मनुष्य इस संसार की सबसे श्रेष्ठ कृति है जिसे सर्वोत्कृष्ट, ज्ञानवान, पवित्र व धार्मिक स्वभाव वाले परमेश्वर ने अपने सर्वज्ञ व परमोत्कृष्ट ज्ञान से बनाया है। मनुष्य को परमात्मा ने क्यों बनाया? इस प्रश्न का उत्तर हमें वेद और ऋषियों द्वारा वेदों के व्याख्यान रूप में लिखे गये शास्त्रों व ग्रन्थों से होता है। मनुष्य जन्म का उद्देश्य मनुष्य की जीवात्मा के पूर्व जन्म के कर्म हैं जिनके फल सुख व दु:ख का उपभोग कराने के लिए परमात्मा जीवात्माओं को जन्म देता है। सत्यासत्य का विवेचन करने पर ज्ञात होता है कि परमात्मा मनुष्यों को अच्छे कर्मों का फल सुख व बुरे कर्मों का फल दु:ख के रूप में देता है। यदि मनुष्य जन्म में, जो कि उभय योनि है अर्थात् इसमें हम कर्मों को भोगते हैं और नये कर्म करते भी हैं, हम कोई बुरा कर्म न करें और केवल अच्छे कर्म ही करें तो हमें कोई दु:ख ईश्वर की व्यवस्था से प्राप्त नहीं होगा। अच्छे कर्मों वा कर्त्तव्यों का ज्ञान परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य अंगिरा को एक-एक वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का ज्ञान देकर कराया है। इन चार ऋषियों के बाद ब्रह्मा, मनु आदि अनेक ऋषि हुए और यह परम्परा महाभारतकाल तक लगभग 1.96 अरब वर्षों तक चली है। अन्तिम ऋषि जैमिनी जी को बताया जाता है और उसके बाद विछिन्न ऋषि परम्परा ऋषि दयानन्द पर पुनर्जीवित हुई और वहीं समाप्त भी हो गई। ऋषि दयानन्द के अनुयायियों में पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, पं. शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ, डा. रामनाथ वेदालंकार, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती आदि अनेक वैदिक विद्वान हुए हैं जो ऋषितुल्य ही पवित्र हृदय व देश-समाज के हितैषी थे। हमारा समस्त वैदिक साहित्य एवं ऋषि मुनि मदिरापान वा नशे के विरुद्ध थे जिसका प्रमुख कारण नशीले पदार्थ मद्य वा शराब आदि से बुद्धिनाश और चारित्रिक पतन का होना है। देश की आजादी के आन्दोलन में अंग्रेज सरकार का शराब की बिक्री के लिए विरोध किया जाता था। धरने व प्रदर्शन किये जाते थे। गांधी जी ने भी कहा था कि जब देश आजाद हो जायेगा तो कलम की नोक से पहला काम देश में पूर्ण नशा-शराब बन्दी का किया जायेगा। इसके विपरीत आजादी के बाद केन्द्र व राज्यों में जो सरकारें रहीं उन सभी ने शराब व नशे के पदार्थों की बिक्री में उन सिद्धान्तों का पालन नहीं किया जिसकी बात आजादी के आन्दोलन में देश के सभी बड़े-बड़े नेता किया करते थे। सरकार को राजस्व से प्रेम है परन्तु ऐसा लगता है कि वह राजस्व का चिन्तन करते हुए नैतिकता व देशवासियों के चरित्र के मापदण्डों को विस्मृत कर शराब की बिक्री में वृद्धि के नाना प्रकार के उपायों को बढ़ावा देती है। यह दु:खद एवं अत्यन्त चिन्ताजनक है। इससे देश का भविष्य व देश के माता-पिता व परिवार रोग, अल्पायु, आर्थिक दिवालियापन आदि अनेक रोगों व व्याधियों से ग्रस्त रहते हैं और उनमें से अधिकांश का जीवन दु:खमय व नरक के समान बनता है। मनुष्य जीवन की उन्नति में जो बाधक कार्य हैं उनका त्याग सबको करना चाहिये। ऐसा इसलिये करना चाहिये कि उन कार्यों को करने से मनुष्य की अवनति, पतन व जीवन दु:खमय बनता है। शराब व नशा करने से मनुष्य की शैक्षिक उन्नति तो बाधक होती ही है, उसका स्वास्थ्य भी बिगड़ता है और उसके फेफड़े, लीवर व अन्य अंग-प्रत्यंग कमजोर व रोगी हो जाते हैं।

शराब पीने के कुछ समय बाद ही व्यक्ति आलस्य से घिर जाता है और किसी भी अच्छे कार्य में उसकी रूचि नहीं होती। मदिरापान के कुछ बार के अभ्यास से ही वह उसका आदी हो जाता है और उसका ध्यान हर समय मदिरापान व नशा करने में ही रहता है। मदिरा का सेवन करने वाले सभी लोग जानते हैं कि मदिरा का सेवन करना बुरी प्रवृत्ति व आदत है, परन्तु कुछ बार मदिरा पीने से जो आदत पड़ जाती है, उसको छोड़ने की इच्छा करने पर भी वह छोड़ नहीं पाते। समाज में अधिकांश अपराध करने वाले लोग अपराध करने से पूर्व मदिरा का सेवन करते हैं। चोरी, हत्या, बलात्कार भी शराब पीकर ही किये जाते हैं। आजकल मदिरापान करना एक फैशन सा हो गया है। जिन लोगों को मदिरापान की बुरी आदत होती है, उनकी संगति में कोई भला सज्जन मनुष्य आ जाये तो यह लोग उसको भी नाना प्रकार से झूठे व प्रलोभन वाले वचन बोलकर उनको मदिरा पान करने के लिए बाध्य करते हैं। हमारे अनेक साथी शराब का सेवन करते थे। एक सज्जन मित्र का बड़ा अच्छा परिवार था। आज वह इस संसार में नहीं है। लगभग 10-15 वर्ष शराबादि के अत्यधिक सेवन से वह मृत्यु का ग्रास बन गये। ऐसे ही एक मित्र हमारे साथ कार्यरत रहे। वह फुटबाल के बहुत अच्छे खिलाड़ी थे। देहरादून व इससे बाहर भी उनकी बहुत प्रसिद्धि थी। ऑफिस में वह शराब प्रेमियों के साथ उठते बैठते थे। युवावस्था में ही उनको मदिरा की लत लग गई। आज यद्यपि वह जीवित हैं, उनका शरीर कहने मात्र का शरीर है, वह जर्जरित व शक्तिहीन हो चुका है। अब सुना है कि उन्होंने मजबूरी में शराब छोड़ रखी है। शायद रोगी, शक्तिहीन व वृद्ध होने पर सभी को शराब छोड़नी पड़ती है। परिवार उनके खर्चीले उपचार व सेवा करके दु:खी हो जाता है। इसके बाद शराबी व्यक्ति को मृत्यु का ग्रास बनना पड़ता है। मृत्यु से पूर्व का उनका जीवन नारकीय जीवन होता है। कुछ का उससे भी अधिक दु:खमय होता है। हम एक ऐसे आर्यमित्र को भी जानते हैं जिनकी आय अधिक थी। उनके कार्य में सहयोगी मदिरापान करते थे। उन्हें उनकी संगति करनी पड़ती थी अन्यथा उन्हें वह काम छोड़ना पड़ता। उन्होंने काम नहीं छोड़ा। धन तो उन्होंने बहुत कमाया परन्तु उनको भी शराब व मांसाहार का रोग लग गया था। कई वर्ष पहले यात्रा कर रहे थे, वाहन में बैठे-बैठे सो गये, निद्रावस्था में ही एक सड़क दुर्घटना में उनका देहावसान हो गया। व्यक्ति अच्छे थे और ऋषि के प्रशंसक थे। आर्य साहित्य के अध्ययन में भी उनकी रूचि थी परन्तु वह जहां कार्यरत थे। वहां अधिक लोग मदिरापान करते थे। वह भी उसमें गिर गये और असमय इस संसार से चल बसे। हमें व दूसरों को उनसे बहुत प्रेरणायें मिलती थी। हम उनसे वंचित हो गये। हम आजकल अपने एक मित्र से मिलने जाते हैं। वहां एक सेवानिवृत अधिकारी आते थे जो मदिरापान करते थे। एक बार उनसे वार्तालाप चल रहा था। वह अपने युवावस्था काल की बातें सुनाने लगे और शराब और मांस की प्रशंसा करने लगे। हमने उनकी बातों को सुना और कर्मफल सिद्धान्त व शारीरिक रोगों के उदाहरणों के आधार पर उनका निराकरण किया। हमने तब भी उनकी बातों के आधार पर शराब और मांस के सम्बन्ध में एक लेख लिखा। आजकल उनको आंखों से दिखना बहुत कम हो गया है। वह सब पढ़ लिख नहीं सकते। एक सहायक के साथ कहीं आ जा सकते हैं। नेत्र दोष व अन्धता भी अधिक मात्रा में मदिरापान करने का परिणाम होता है। अब डाक्टर उन्हें 35 हजार तक के इंजेक्शन लगाते हैं परन्तु फिर भी वह स्वस्थ नहीं हो पा रहे हैं।

बुद्धिमान मनुष्य वह होता है जो कार्य करने से पहले उसके परिणाम का चिन्तन कर उसको जान लेता है। शराब का पीना किसी भी दृष्टि से लाभप्रद नहीं है। इससे हानि ही हानि है। ऐसे लोगों को सबसे पहले अपनी संगति बदलनी चाहिये। मदिरापान करने वालों की संगति यथाशीघ्र छोड़ देनी चाहिये और स्वास्थ्यवर्धक भोजन गोदुग्ध, गोघृत, फल, तरकारियों का सेवन करने के साथ प्रातः भ्रमण, व्यायाम व योग की ध्यान विधि से ईश्वरोपासना व दैनिक यज्ञ आदि का सेवन करना चाहिये। ऐसा करके दानव मनुष्य भी मानव व देवता बन सकते हैं और अपना और अपने शुभचिन्तक परिवारजनों का हित कर सकते हैं। हमने मदिरापान करने वाले परिवारों की दुर्दशा को भी देखा है। ऐसे लोगों की पत्नियों को अपना व बच्चों का पालन करने के लिए छोटा मोटा कार्य करना पड़ता है। कई तो दूसरों के घरों में चौका बर्तन आदि कार्य करती हैं। बच्चों व परिवारजनों को अच्छा भोजन नसीब नहीं होता। बच्चे अच्छे स्कूलों में नहीं पढ़ पाते। बीच में ही उनकी पढ़ाई रुक जाती है। मदिरापान करने वाले परिवार के मुख्य व्यक्ति बच्चों

(शेष पृष्ठ 6 पर)

ज्ञान से मानव क्रियमान बनता है

ले.-डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी

हम सदा अभय रहें, हमारे में किसी प्रकार का उद्वेग न हो। हमारे यज्ञ में कभी रुकावट न आवे। हम सदा अपने ज्ञान, अपनी भक्ति तथा अपने कर्म का सदा विस्तार करें। हम जो ज्ञान-पूर्वक कर्म करते हैं, वह ही भक्ति है तथा ज्ञान हम उसे ही मानते हैं, जो हमें सदा किसी न किसी क्रिया में लगाये रखते है। यजुर्वेद का यह प्रथम अध्याय का २३वां मन्त्र हमें यह सन्देश इन शब्दों में दे रहा है-

मा भेर्मा संविक्थाऽअतमेरुर्यज्ञोऽतमेरुर्यजमानस्य प्रजा भूयात् त्रिताय त्वा द्वितीय त्वैकताय त्वा।। यजु. १.२३।।

पूर्व मन्त्र में यह बताया गया है कि जिस व्यक्ति का सविता देव के द्वारा अच्छी व भली प्रकार से परिपाक हो जाता है, ऐसा व्यक्ति सदा ही किसी प्रकार से भी भयभीत नहीं होता। वह सदा निर्भय ही रहता है। ऐसे व्यक्ति में दैवीय सम्पति अर्थात् दैवीय गुणों का विकास होता है, विस्तार होता है। यह विकास अभय अर्थात् भय रहित होने से ही होता है। इसलिये यह मन्त्र इस बात को ही आगे बढ़ाते हुए तीन बिन्दुओं का विचार देते हुए उपदेश कर रहा है कि :

१. प्रभु भक्त को कभी भय नहीं होता-मन्त्र उपदेश कर रहा है कि हे प्राणी! तू डर मत। तुझे किसी प्रकार का भय नहीं होना चाहिये। तू प्रभु से डरने के कारण सदा प्रभु के आदेश का पालन करता है, प्रभु की शरण में रहता है। जो प्रभु की शरण में रहता है, प्रभु के आदेशों का पालन करता है, वह संसार में सदा भय रहित होकर विचरण करता है। अन्य किसी भी सांसारिक प्राणी से कभी भयभीत नहीं होता।

इसके उलट जो व्यक्ति उस परमपिता से कभी भय नहीं खाता, कभी भयभीत नहीं होता, ऐसा व्यक्ति संसार के सब प्राणियों से, सब अवस्था में भीरु ही बना रहता है, डरपोक ही बना रहता है, सदा सब से ही भयभीत ही रहता है, जबकि प्रभु से डरने वाला सदा निडर ही रहता है। इसलिए मन्त्र कह रहा है कि हे प्राणी! प्रभु से लगन लगा, किसी प्रकार से उद्वेग से तू डर मत, कम्पित मत हो, भयभीत न हो। तू ठीक मार्ग पर, सुपथ पर चलने वाला है। सुपथ पर जाने वाले को कभी किसी प्रकार का भय, कम्पन नहीं होता।

२. अबाधित यज्ञ-हे प्राणी। तू सच्चा प्रभु भक्त होने के कारण सदा यज्ञ करने में लगा रहता है किन्तु इस बात का स्मरण बनाये रखना कि तेरा यह यज्ञ कभी श्रान्त न हो, कभी बाधित न हो, कभी इस में रुकावट न आने वाले। इसे अनवरत ही करते रहना। इस सब का भाव यह है कि तू सदा यज्ञ करने वाला है तथा तेरी यह यज्ञ की भावना सदा बनी रहे, निरन्तर यज्ञ करने की भावना तेरे में बनी रहे। तू सदा ऐसा यत्न कर कि तेरी यह भावना कभी दूर न हो। इस सब का भाव यह ही है कि हम सदा यज्ञ करते रहें, परोपकार करते रहें, दूसरों की सहायता करते रहें। हमारी इस अभिरुचि में कोई कमीं न आवे। कभी कोई समय ऐसा न आवे कि हम इस यज्ञ की परम्परा को बाधित कर कुछ और ही करने लगें।

३. प्रभु यज्ञशील व्यक्ति को चाहता है-हम यह जो यज्ञ करते हैं, इस कारण हम प्रभु की सच्ची सन्तान हैं। मन्त्र कह रहा है कि प्रभु यज्ञशील को ही पसन्द करते हैं। वह यज्ञशील व्यक्ति को पुत्रवत् प्रेम करते हैं। वह नहीं चाहते कि उसकी सन्तान कभी उत्तम कर्म करते-करते थक जावें। प्रभु अपनी सन्तान को सदा बिना थके कर्म करते हुए देखना चाहते हैं। निरन्तर कर्म में लिप्त रहना चाहते हैं। अकर्मा तो कभी होता देख ही नहीं सकते। इस के साथ ही मन्त्र यह भी कहता है कि जो व्यक्ति सदा कर्म करते हुए अपने सब यज्ञ के कार्यों को सम्पन्न करते हैं, ऐसे व्यक्तियों का सम्बन्ध परमपिता परमात्मा से सदा बना रहता है। वह कभी उस पिता से दूर नहीं होते। सदा प्रभु से जुड़े रहते हैं। कभी थकते नहीं, कभी विचलित नहीं होते, कभी भयभीत नहीं होते। उनकी निरन्तरता कभी टूटती नहीं। जो लोग प्रभु के नहीं केवल प्रकृति के ही उपासक होते हैं, वह कुछ ही समय में थक जाते हैं, श्रान्त हो जाते हैं। ऐसे लोगों का जीवन विलासिता से भरा होता है। ऐसे लोग काम क्रोध, जुआ, नशा आदि के शिकार होने के कारण उनका शरीर जल्दी ही क्षीण हो जाता है, जल्दी ही कमजोर हो कर थक जाता है। अनेक प्रकार के रोग उन्हें घेर लेते हैं तथा अल्पायु हो जाते हैं।

४. ज्ञान प्रधान हो-मन्त्र आगे कह रहा है कि मानव को ज्ञान का प्रधान होना चाहिये, वह कर्म में भी कभी पीछे न रहे तथा प्रभु भक्ति से भी कभी मुख न मोडे। इसलिए ही मन्त्र उपदेश करते हुए कह रहा है कि प्रभु अपने भक्तों को, अपने पुत्रों को, अपनी उपासना करने वालों के ज्ञान, उनके कर्म तथा उनकी उपासना में कभी कमीं नहीं आने देते अपितु उन्हें अपने यह सब गुण बढ़ाने के लिए प्रेरित करते हैं। वह प्राणी के इन गुणों को बढ़ाने के लिए सदा उसे उत्साहित करते रहते हैं। इस का कारण है कि जो भक्ति ज्ञान सहित की जावे, वह ही भक्ति कहलाती है। इसे ही भक्ति कहते हैं। इसलिए मन्त्र यह ही उपदेश करता है कि तेरे ज्ञान तथा कर्म में निरन्तर विस्तार होता रहे, निरन्तर उन्नति होती रहे, निरन्तर आगे बढ़ता रहे।

५. क्रियमान ज्ञानी बन-मन्त्र यह भी कहता है कि हमारे जितने भी आवश्यक कर्म है, उन सब की प्रेरणा का स्रोत, उन सब की प्रेरणा का केन्द्र, उन सब की प्रेरणा का आधार ज्ञान ही होता है। इसलिए इस मन्त्र के माध्यम से परमपिता परमात्मा उपदेश करते हुए कह रहे हैं कि मैं तुझे ज्ञान के बढ़ाने की ओर प्रेरित करता हूं, मैं तुझे अपने ज्ञान को निरन्तर बढ़ाने के लिए आह्वान करता हूं। यह तो सब जानते हैं कि ब्रह्मज्ञानियों में भी जो क्रियमान होता है, वह ही उत्तम माना जाता है, श्रेष्ठ माना जाता है। इसलिए हे प्राणी! तू निरन्तर स्वाध्याय कर, निरन्तर ऐसे कर्म कर, निरन्तर ऐसे कार्य कर कि जिससे तेरे ज्ञान का विस्तार होता चला जावे, कि जिससे तेरे ज्ञान को बढ़ावा मिले।

आर्य महासम्मेलन का आयोजन

सभी आर्य बन्धुओं को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि तपोमूर्ति स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज की तपस्थली पर्वतों की उपत्यका एवं नदियों के संगम दयानन्द मठ चम्बा हिमाचल प्रदेश में पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज का जन्मदिवस आर्य महासम्मेलन के रूप में मनाया जा रहा है। हम सब मिलकर अपनी उत्तम बुद्धियों से महर्षि के मिशन के लिए जीवन को उत्सर्ग करने वाले उस सन्त के कार्यों को गति देने के लिए, उनकी कर्मस्थली दयानन्द मठ चम्बा की इस धरा को तीर्थ बनाने के लिए विचारपूर्वक कर्म करते हुए बुद्धिमत्ता का परिचय दें और अपने आर्यत्व को सार्थक करें।

आर्य बन्धुओ! 5 मई 2018 को आर्यजगत् के प्रख्यात तपस्वी सन्त पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के सुयोग्य शिष्य, महान् याजक, परोपकार परायण, स्वनामधन्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज का जन्मदिवस है। 5 व 6 मई को आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के तत्वावधान में इस दिवस को धूमधाम से आर्य महासम्मेलन के रूप में मना रहे हैं। पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज का जीवन परोपकार के कार्यों के लिए समर्पित था। इस महासम्मेलन की सफलता के लिए दयानन्द मठ चम्बा की प्रबन्धक समिति, स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मण्डल एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के अधिकारी अभी से तैयारी में जुट गए हैं। आर्य जगत् के सुविख्यात विद्वान् हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य डॉ. देवव्रत जी इस महासम्मेलन में पधार कर इसकी शोभा बढाएंगे। आर्य जगत के प्रख्यात विद्वान् विद्वत् शिरोमणि आचार्य रामानन्द जी शिमला एवं आचार्य राजेन्द्र जी विद्यालंकार अपने उद्‌बोधन से सबको कृतार्थ करेंगे। पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के एकमात्र शिष्य स्वामी सवितानन्द जी झारखण्ड वाले इस सम्पूर्ण कार्यक्रम के कर्त्ता धर्त्ता हैं। आदरणीय स्वामी सदानन्द जी महाराज अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर अपना आशीर्वाद प्रदान करेंगे। आप लोग इस सुरम्य व आकर्षक प्राकृतिक छटा वाले इस पावन पवित्र धरा दयानन्द मठ की पावन भूमि पर होने वाले इस समागम में पधारने की कृपा करें। यज्ञ व सत्संग के मध्य से प्रवाहित होने वाली ज्ञान गंगा में स्नान करने के लिए अपने पारिवारिक जनों एवं इष्ट मित्रों को प्रेरित करें। साथ ही इस आयोजन के लिए भरपूर दान राशि भेजकर महान् पुण्य के भागी बनें। आपके द्वारा परोपकारार्थ इस महान् यज्ञ में डाली गई आहुति आपके परिवार के लिए सुख समृद्धि का कारण बनेगी। इसलिए आप सभी आर्य बन्धुओं से पुनः निवेदन है कि अपनी-अपनी संस्थाओं की ओर से अधिक से अधिक संख्या में पधार कर इस आर्य महासम्मेलन की शोभा को बढ़ाएं एवं अपना आशीर्वाद देकर कृतार्थ करें।

आचार्य महावीर सिंह अध्यक्ष दयानन्द मठ चम्बा

पृष्ठ 4 का शेष-'नशे से पतन की...

के पिता प्राय: अस्वस्थ रहते व अक्सर हो जाया करते हैं। धन कमा नहीं पाते और यदि कुछ कहीं से मिलता है तो उससे मदिरापान करते हैं। ऐसे परिवार कर्जदार हो जाते हैं और समाज में उनकी प्रतिष्ठा भी नहीं होती। सभी लोग ऐसे परिवारों से दूरी बनाकर रखते हैं। सहायता के लिए न कोई पड़ोसी आता है और न रिश्तेदार। ऐसे बच्चों की मनोदशा का हमने अनुभव किया है। वह अपनी पीड़ा किसी से कह नहीं सकते। प्रतिभावान व पुरुषार्थी होने पर भी समाज की दौड़ में वह पिछड़ जाते हैं और साधारण कार्य करने को विवश होते हैं। कालान्तर में वह स्वयं संगति दोष और विचारों की दृढ़ता न होने से स्वयं भी शराब का शिकार हो जाते हैं और उनके भी परिवार का पतन होता है। इससे यही सिद्ध होता है कि मनुष्य शराब का सेवन किंचित भी न करे और न ही मदिरापान करने वाले लोगों की संगति करे।

यह बहुत ही दु:खद है कि हमारी प्रतिनिधि सरकारें अपने भारी भरकम खर्चों को पूरा करने के लिए राजस्व की प्राप्ति के लिए शराब जैसी हानिकारक व देश के पतन में सहकारी मदिरापान की बिक्री बढ़ाने में लगी रहती हैं। सरकार को तो राजस्व कम ही मिलता है। सरकार से अधिक तो शराब व्यापारियों व माफियाओं के पास धन जाता है जिससे अच्छे काम ही होते होंगे, यह अनुमान नहीं लगता। यदि शराब की कुल खपत पर विचार करें तो स्थिति चौंकाने वाली होगी। शराब पीने वाले अधिकांश लोग मांस भी खाते हैं। इससे पशु हिंसा को बढ़ावा मिलता है जिसकी हमारे वेद आदि सभी धर्म ग्रन्थों व धार्मिक महापुरुषों ने निन्दा की है। राम, कृष्ण व दयानन्द के देश में उनके अनुयायी लोग यदि मदिरा पान करते हैं तो यह देशवासियों द्वारा अपने महापुरुषों का अपमान है। आश्चर्य तो इस बात का है कि हमारे धार्मिक पुजारी व मठ मन्दिरों के संचालक स्वामी भी इन बुरे पदार्थों के सेवन का विरोध नहीं करते। हमने मन्दिरों आदि में कहीं ऐसा कोई संकेत नहीं देखा कि जहां लिखा हो कि मदिरा और मांस का सेवन करने वाला मनुष्य धार्मिक नहीं होता। वह पशुओं को कष्ट देने के कारण अपराधी होता है जिसका दण्ड ईश्वर के विधान से उन्हें मिलता है। पशुओं का मांस खाने से रोगों से संबंधित जानकारियां भी हमारे पौराणिक सनातनी धार्मिक विद्वान व धर्मप्रचारक अपने अनुयायियों को नहीं देते। यह कैसे नेता व विद्वान हैं जो अपने ही अनुयायियों को पथ भ्रष्ट व पापों में लिप्त रहने देते हैं। यह स्थिति दु:खद है।

यदि हम अपने समाज व देश को उत्तम व उत्कर्ष की ओर ले जाना चाहते हैं तो हमें युवापीढ़ी सहित सभी लोगों को जो मदिरा व नशे का सेवन करते हैं, इससे होने वाली हानियों का प्रचार करके उन्हें बचाना होगा। स्वामी रामदेव जी धर्मप्रचारकों में अपवाद हैं। वह अपने उपदेशों व व्याख्यानों में मदिरा, मांस, अण्डे व धूम्रपान आदि की आलोचना करते रहते हैं। सभी धार्मिक नेताओं व विद्वानों का यह कर्त्तव्य हैं कि वह लोगों को सत्यासत्य से परिचित करायें और उन्हें बुराईयों को छोड़ने की प्रेरणा करें। प्राचीन काल में हमारे देश में महाराज अश्वपति हुए हैं जिन्होंने कुछ संन्यासी विद्वानों को उनका आतिथ्य ग्रहण न करने पर कहा था कि मेरे राज्य में कोई चोर नहीं है, कोई कंजूस नहीं है, कोई मदिरा व मांस आदि का सेवन करने वाला नहीं है, कोई ऐसा नहीं जो प्रतिदिन अग्निहोत्र यज्ञ न करता हो, कोई व्यभिचारिणी स्त्री नहीं है तो व्यभिचारी पुरुष के होने का तो प्रश्न ही नहीं है।

आज विश्व में एक भी ऐसा देश नहीं है जहां के लोग मदिरा व तामसिक पदार्थों का सेवन न करते हों। यह सत्य है कि विज्ञान ने असीम उन्नति की है परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि वह नैतिकता व चारित्रिक व्यवहार की उपेक्षा की जाये। मदिरापान व मांसाहारियों को ऐसा करना इस जन्म व परजन्म में बहुत महंगा पड़ेगा।

ईश्वर सबको प्रेरणा करें कि वह असत्य व दुर्गुणों का त्याग कर सत्य व सद्गुणों को धारण कर समाज व देश को विश्व का आदर्श लोक बनायें। ईश्वर हमें असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमरता की ओर चलने की प्रेरणा करें और हम उसका पालन कर अपने जीवन को आदर्श जीवन बनायें। मदिरापान, मांसाहार, अण्डों का सेवन और धूम्रपान जैसे व्यसनों का सर्वथा त्याग कर दें।

इसी में हमारी, हमारे परिवार, समाज व देश की भलाई है। सभी सरकारों को भी समाज, राज्य व देश को बुराईयों से मुक्त करने में अपनी प्रमुख भूमिका को तत्परता व प्रभावपूर्ण तरीके से निभाना चाहिये।

भय सबसे बड़ा शत्रु है

ले.-डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी

परमात्मा ने मनुष्य को अपार शक्ति प्रदान कर रखी है। चाहे हमारी हाथ-पैर आदि पांच कर्मेन्द्रियां हों, चाहे बोलने व देखने आदि के साधन पांच ज्ञानेन्द्रियां हों इनमें अपार शक्ति और सामर्थ्य है। इससे भी अधिक सामर्थ्यवान् एवं शक्तिशाली हमारा अन्त:करण है। जिसमें मन, बुद्धि, चित्त और चित्त-साक्षी की स्मृति का समावेश है। मनु, बुद्धि एवं चित्त की शक्ति अद्भुत एवं अवर्णनीय है। इन बाह्य करणों एवं अन्त:करणों का यदि व्यक्ति सही-सही ढंग से अपने आत्म-साक्षी भाव में जागृत रहकर कार्य करे तो उसके लिए संसार में कुछ भी असंभव नहीं है मगर जब कोई काल्पनिक भय हम अपने मन में बिठा लेते हैं तो इनकी शक्तियों का हम सही-सही प्रयोग नहीं कर पाते हैं...बल्कि हम इनकी शक्तियों को ही समाप्तप्राय कर बैठते है। 'यार यह काम तो मेरे बस का ही नहीं है... यह तो मैं कर ही नहीं सकता हूँ...' इस प्रकार की सोच का सृजन वास्तव में भय से ही होता है। किसी मनोवैज्ञानिक का कहना है-'भय चेतन या अवचेतन रूप में अपनी आध्यात्मिक, नैतिक अथवा शारीरिक निर्बलता को स्वीकार करना है। यह स्वीकृति व्यक्ति को उसकी इच्छा के अनुसार आचरण करने से रोकती है और वह व्यर्थ की बातें सोचने लगता है कि मैं इस काम के योग्य नहीं हूँ। यह भावना इन्द्रियों को अपाहिज बनाती है और मन को शिथिल करती है। लोग इस तथ्य को नहीं समझते कि शिथिलता का उस स्थिति से कोई सम्बन्ध नहीं जो हमारे सामने होती है, बल्कि इसका सम्बन्ध हमारे मनोगत भय से होता है। प्रत्येक स्थिति में किसी न किसी तरह का आचरण संभव है और आचरण भय की भावना को दूर भगाता है। आचरण पर ध्यान केन्द्रित होने से भय का नाश होता है। बुराई की अपनी कोई शक्ति नहीं होती, जितना हम उससे डरते हैं उतना ही वह सशक्त बनती है अगर हम अपने को तुच्छ न समझें,उससे डरे न, तो बुराई हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती है। हमें यह समझ लेना चाहिए कि जिसे हम बुराई समझ रहे हैं, हमसे अलग उसका कोई अस्तित्व नहीं है क्योंकि भगवान का सिद्धान्त एकता है। समस्त शक्ति भगवान की है। इस शक्ति से बाहर कुछ नहीं। चेतना में से गुजरकर ही कोई चीज सशक्त बनती है। यूँ बुराई भी चेतना का ही एक रूप है, यह रूप अस्थाई है। उसे फिर भगवान में लीन होना है। अब अगर यह विचार ही मन में न रहे कि बुराई हमारी अच्छाई से कुछ अलग है और हम यह जान लें कि उसने अपने वास्तविक स्थान से कटकर यह अस्थाई रूप धारण किया है, तो उससे भयभीत होने का कोई कारण नहीं रह जाता है।'

जब भय के कारण व्यक्ति का शरीर, मन तथा बुद्धि और चित्त डांवाडोल होते हैं तो उसके भीतर अनावश्यक चिन्ताओं का वास होने लगता है और ये भय और चिन्ताएं उसके पूरे तन्त्र को विक्षिप्त कर देते हैं...वह अपना आत्मविश्वास पूर्ण रूप से खो बैठता है तथा उसके मन में संसार के प्रति न केवल पलायनवादी भावना बनती है बल्कि उसे यहां तक अनुभव होने लगता है कि वह जीवन में अब कुछ भी नहीं कर सकेगा....क्योंकि जब भी हमारे भाव बदलते हैं तो हमारे विचार भी बदलने लगते हैं तथा उनके साथ ही रक्त-प्रवाह आदि की प्रक्रियाएं भी बदलनी आरंभ हो जाती हैं.....भय-भावना से ग्रसित व्यक्ति ऐसी काल्पिनिक चिन्ताओं के चक्रव्यूह में फंस जाता है जो कि वास्तव में है ही नहीं। एक युवक अपनी विधवा मां के साथ रहता था। वह बिल्डर का कार्य करता था। वह प्रतिदिन प्रात:काल अपने काम पर जाता था और शाम को लगभग सात बजे घर आ जाता था। एक दिन वह सात बजे घर नहीं पहुंचा तो उसकी मां भय के कारण कई प्रकार की कल्पनाएं करने लगी। आज मेरा बेटा अभी तक नहीं लौटा है, कहीं वह किसी दुर्घटना का शिकार तो नहीं हो गया.....वही तो मेरा एक सहारा है.....बेचारे का अभी तो विवाह भी नहीं हुआ है....जब उसकी दुर्घटना हुई होगी तो पता नहीं उसका कौन-कौन सा अंग टूट गया होगा....भयंकर दर्द में वहां किसने उसकी सहायता की होगी....पता नहीं किस अस्पताल में उसे एडमिट कराया होगा....पता नहीं समय पर अस्तपताल पहुंच भी सका होगा कि नहीं....मां इस प्रकार की चिन्ता में बुरी तरह से भयग्रस्त थी तथा वह पड़ोसी को यह सब बताने जाने वाली ही थी अचानक उसका बेटा आ गया। मां ने उसे बताया कि वह उसके लिए किस

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पृष्ठ 2 का शेष-वेद में आधुनिक...

को लेकर स्वामी जी ने टीचर्स, स्टूडैण्ट्स एवं वैज्ञानिकों को इस प्रकार परामर्श दिया है-वह (अग्नि) परमेश्वर (ईड्य:) स्तुति करने योग्य और यह भौतिक अग्नि नित्य खोजने योग्य है।

हम यहाँ दावे के साथ कहना चाहेंगे कि आज जिस तकनीकी (टैक्नॉलाजी) ने तहलका मचाया हुआ है। सॉफ्टवेयर की तकनीकी से प्रतिदिन नये-नये आविष्कार सम्मुख आ रहे हैं। दो-चार महीनों में नये तकनीक के कारण पुराना तकनीक लुप्त हो रहा है। मोबाईल पुराने हो रहे हैं, नये तकनीक से सजे मोबाईल शीघ्र आ रहे हैं। ये सब अग्नि शब्द की ही प्रैक्टिकल व्याख्यामात्र है। मैं इस विज्ञान को ऋग्वेद के इस प्रथम मन्त्र की ही प्रेक्टिकल कमेण्ट्री मानता हूँ और इन वैज्ञानिकों को भी, ऋषि कल्प मानता हूँ, ऋषि पुत्र मानता हूँ।

आज जो नई तकनीकी के कारण पुराना तकनीक पुराना हो रहा है, इसकी ओर भी स्वामी दयानन्द ने अपने वेदभाष्य में इस प्रकार संकेत किया है-'जो सब विद्याओं को पढ़ के औरों को पढ़ाते हैं तथा अपने उपदेश से सबका उपकार करने वाले हैं वे पूर्व शब्द से और जो अब पढ़ने वाले विद्या ग्रहण के लिए अभ्यास करते, वे नूतन शब्द से ग्रहण किये जाते हैं। वे सब पूर्ण विद्वान् शुभगुण सहित होने पर ऋषि कहाते हैं। और जो सर्वत्र परमेश्वर ने पूर्व और वर्तमान अर्थात् त्रिकालस्थ ऋषियों को अपने सर्वज्ञपन से जानकर इस मन्त्र में परमार्थ और व्यवहार ये दो विद्या दिखलाई है, इससे इसमें भूत वा भविष्यकाल की बातों के कहने में कोई भी दोष नहीं आ सकता, क्योंकि वेद सर्वज्ञ परमेश्वर का वचन है। वह परमेश्वर उत्तम गुणों को तथा भौतिक अग्नि व्यवहार कार्यों में संयुक्त किया हुआ, उत्तम-उत्तम भोग के पदार्थों का देने वाला होता है। पुराने की अपेक्षा एक पदार्थ से दूसरा नवीन और नवीन की अपेक्षा पहला पुराना होता है।

देखो, इस मन्त्र का यही अर्थ निरुक्तकार ने भी किया है कि-प्राकृत जन अर्थात् अज्ञानी लोगों ने जो प्रसिद्ध भौतिक अग्नि पाक बनाने आदि कार्यों में लिया है, वह इस मन्त्र में नहीं लेना, किन्तु सबका प्रकाश करने वाला परमेश्वर और सब विद्याओं का हेतु जिसका नाम विद्युत् है, उसी भौतिक अग्नि को यहाँ अग्नि शब्द से लिया है।

वेदों में 'अश्विनौ' शब्द की भी चर्चा यत्र-तत्र-बहुत्र मिलती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती इस 'अश्विनौ' शब्द की अभूतपूर्व व्याख्या करते हैं। प्राचीन निरुक्त आदि के प्रमाणों तथा स्वोपज्ञ 'योगज-बुद्धि' से विज्ञान से सम्बन्धित अनेक रहस्यों का उद्घाटन करते हैं। ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका के 'नौविमानादि विषय:' प्रकरण में वे लिखते हैं-'वायु और अग्नि आदि का नाम 'अश्वि' है, क्योंकि सब पदार्थों में 'धनंजय' रूप करके वायु और 'विद्युत्' रूप से अग्नि ये दोनों व्याप्त हो रहे हैं। तथा जल और अग्नि का नाम भी 'अश्वि' है, क्योंकि अग्नि ज्योति से युक्त और जल रस से युक्त हो के व्याप्त हो रहा है। 'अश्वै:' अर्थात् वेगादि गुणों से युक्त है। जिन पुरुषों को विमान आदि सवारियों की सिद्धि इच्छा हो, वे वायु, अग्नि और जल से उनको सिद्ध करें।

जो अश्वि अर्थात् अग्नि और जल हैं, उनके संयोग से भापरूप अश्व अत्यन्त वेग देने वाला होता है। उसको जितना बढ़ाना चाहे उतना बढ़ सकता है। जिन यानों में बैठ के समुद्र और अन्तरिक्ष में निरन्तर स्वस्ति अर्थात् नित्य सुख बढ़ता है जो कि वायु, अग्नि और जल आदि से वेग गुण उत्पन्न होता है, उसको मनुष्य लोग सुविचार से ग्रहण करें। यह सामर्थ्य पूर्वोक्त अश्वि संयुक्त पदार्थों ही में हैं। सब शिल्पी विद्वान् लोग ऐसे यानों को सिद्ध करना अवश्य जानें। जिन यानों को सिद्ध करना अवश्य जानें। जिन यानों से तीन दिन और तीन रात में द्वीप-द्वीपान्तर में जा सकते हैं। हे मनुष्य लोगो! (मनोजुव:) अर्थात् जैसा मन का वेग है, वैसे वेग वाले यान सिद्ध करो। उन रथों में (मरुत्) अर्थात् वायु और अग्नि को मनोवेग के समान चलाओ।''

आज जो चन्द्रयान, मंगलयान आदि शीघ्रगामी तथा युद्ध क्षेत्र से सम्बन्धित विविध ड्रोन, टैंक, जलपोत तथा विस्मयकारी अनेक आयुधों का निर्माण हो चुका है, वह सब अग्नि से सम्बन्धित ही विद्या है। अग्नि में प्रकाश है, ज्वलन शक्ति है, द्रुतगति है, विद्युत् के रूप में ऊर्जा है। प्रकाश की तीव्रतम गति से हम सब सुपरिचित हैं। अत: डेस्कटाप, लैपटाप, पॉमटाप और हर हाथ में विद्यमान मोबाईल ने जो अद्भुत क्रान्ति प्रस्तुत की है, उसमें यही अग्नि विद्या है और एकमात्र विचित्र विद्युद्विद्या है। अखबार, किताब, मैगजीन व टीवी के स्थान पर आज न्यूमीडिया, सोशल मीडिया, वॉट्सएप, फेसबुक, मैसेंजर, यू ट्यूब, ट्विटर आदि का जो बोलबाला है, वह सब इस विद्युत् का ही चमत्कार है और इस चमत्कार को नमस्कार है-'अग्निम् ईडे पुरोहितम्।'

वधु की आवश्यकता

अरोड़ा परिवार के 29 वर्षीय युवक, शिक्षा M Tech, MNC गुड़गांव में कार्यरत, अच्छा वेतन हेतु समक्ष योग्यता वाली कार्यरत आर्य परिवार की कन्या चाहिए। जाति बन्धन नहीं। कृपया Biodata फोटो सहित Whatsapp No 8360536336 पर भेजें।

पृष्ठ 6 का शेष-भय सबसे बड़ा शत्रु है

प्रकार से चिन्तित रही....बेटे ने हंसकर कहा मां आदमी को बेकार की बुरी कल्पनाएं नहीं करनी चाहिए। मेरी देरी से आने के कारण के सम्बन्ध में यदि सोचना ही था तो बुरा-बुरा ही क्यों सोचा, तुम अच्छा-अच्छा भी तो सोच सकती थी। तुम यह भी तो सोच सकती थी कि आज मेरे बेटे को कोई बहुत बड़ा काम मिला होगा इसलिए उसे देर हो गई है आदि....और मां वास्तव में हुआ भी यही है। आज मेरे पांच फलैट एक साथ ही बिक गए हैं। यदि जीवन में विकास करना है तथा सुख और शान्ति के साथ रहना हो तो अनावश्यक भय से व्यक्ति को मुक्ति पानी होगी। भविष्य की चिन्ता करने से अच्छा है कि अपने वर्तमान को संवारें। वेद कहता है-**मा भेर्मा संविक्था**। हे मनुष्य! तू मत डर, मत घबरा।

आशावादी सोच के द्वारा भय से सदा-सदा के लिए मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। इससे व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है। आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए सदा ही सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिए। सत्य और धर्म दो ऐसे साधन हैं जिन्हें अपना साथी बनाने से व्यक्ति जीवन में निर्भय और आत्मविश्वासी हो जाता है....सद्व्यवहार, सदाचार और सुशीलता एवं विनम्रता आदि गुणों को अपनाना चाहिए। हम सदा ही ज्ञान व प्रकाश के मार्ग पर चलें....सच्चरित्रता के मार्ग पर चलें....सदा ही शुभकर्म एवं परोपकार के कार्य करते रहें.....बहुत बार यही देखा गया है कि व्यक्ति वही भयभीत होता है जो किसी न किसी दुरित से ग्रसित हो। इसलिए व्यक्ति को पापाचार, दुराचार और दुष्कर्मो से सदा ही दूरी बनाए रखनी चाहिए। वह व्यक्ति भी भयभीत एवं चिन्ताग्रस्त रहता है जिसमें किसी न किसी प्रकार का दोष हो जैसे चरित्र दोष, स्वार्थ दोष, अज्ञान दोष और अभाव दोष आदि। सच्चरित्रता के मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति कभी भी किसी से भय नहीं करता है क्योंकि उसे अपने चरित्र पर पूरा विश्वास होता है और यह विश्वास ही उसे आत्मबल और शक्ति प्रदान करता है। स्वार्थ दोष जिसमें है वह भी भयग्रस्त रहता है क्योंकि वह सदा अपने ही बारे में सोचता है और यह सोच उसे धीरे-धीरे कुंठा की कगार तक ले जाती है। वह अपने अतिरिक्त किसी और का भला देख ही नहीं सकता है....वह केवल इसलिए ही दु:खी और भयभीत नहीं रहता कि उसका कुछ छिन् न जाएगा बल्कि वह इससे भी दु:खी और भयभीत रहता है कि किसी दूसरे को कुछ मिल न जाए....वह किसी दूसरे की स्मृद्धि और सफलता देख ही नहीं सकता है....अज्ञानता का दोष जिसमें हो वह भी भयग्रसित रहता है तथा हमेशा ही अनावश्यक चिन्ताजनक कल्पनाएं करता रहता है। इसी प्रकार एक दोष है अभाव दोष अर्थात् अपने मन, बुद्धि एवं चित्त की कमियां और चचंलता व विक्षिप्तता। यदि व्यक्ति स्वयं को वेद-वीहित गुणों से सुसज्जित कर ले तो वह अनावश्यक भय और चिन्ताओं से सदा-सदा के लिए मुक्त हो सकता है। भय को दूर करने का एक सबसे रामबाण औषधी है, आस्तिक-भाव। आस्तिक व्यक्ति को परमात्मा की दयालुता और न्याय-व्यवस्था पर पूर्ण विश्वास होता है। इसलिए वह किसी भी परिस्थिति में कभी भी डांवाडोल नहीं होता है अत: व्यक्ति को सदा ही आस्तिक-भाव बनाए रखना चाहिए। उसे परमात्मा पर पूर्ण श्रद्धा, विश्वास ही नहीं होता बल्कि परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण भी होता है....इससे उसमें अपार बल, साहस और आत्मविश्वास पैदा होता है तथा जिस व्यक्ति में ये गुण हैं उसके भयभीत होने का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता है।

अब मुझे डूबने का कोई गम नहीं,

मैं तेरा, दरिया तेरा किश्ती तेरी।

पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में 1975 में स्थापित महर्षि दयानन्द चेयर को संस्कृत चेयर में विलय करने के विरोध में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में 16 अप्रैल 2018 को पंजाब की समस्त आर्य समाजों द्वारा जिलाधीशों को ज्ञापन पत्र दिये गये। इसमें से कुछ आर्य समाजों के चित्र।

जालन्धर की आर्य समाजों के सदस्य श्री सरदारी लाल जी आर्य उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार के नेतृत्व में ज्ञापन पत्र देने जाते हुये।

आर्य समाज नवांशहर के सदस्य श्री विनोद भारद्वाज जी सभा मंत्री एवं श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल अधिष्ठाता साहित्य विभाग के नेतृत्व में जिलाधीश को ज्ञापन पत्र देते हुये।

लुधियाना की समस्त आर्य समाजों के सदस्य श्रीमती राजेश शर्मा सभा उप प्रधाना एवं श्री विजय सरीन जी सभा मंत्री के नेतृत्व में ज्ञापन पत्र देने जाते हुये।

आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट एवं आर्य समाज माडल टाउन के आर्य जन श्री स्वतंत्र कुमार जी सभा उप प्रधान एवं पूर्व कुलपति के नेतृत्व में जिलाधीश पठानकोट को ज्ञापन पत्र देते हुये।

आर्य समाज फाजिल्का के सदस्य श्री सुशील वर्मा जी के नेतृत्व में जिलाधीश फाजिल्का को ज्ञापन पत्र देते हुये।

आर्य समाज धिलौडी गेट पटियाला के सदस्य श्री वीरेन्द्र कौशिक के नेतृत्व में जिलाधीश पटियाला को ज्ञापन पत्र देते हुये।

आर्य समाज, आर्य समाज चौक बठिंडा के सदस्य श्री अश्विनी मोंगा एवं श्री गौरी शंकर के नेतृत्व में जिलाधीश बठिंडा को ज्ञापन पत्र देते हुये।

आर्य समाज जलालाबाद के सदस्य एस.डी.एम को ज्ञापन पत्र देते हुये।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।